|  |
| --- |
| 1. Februar 2025
 |
| **6. Sonntag im Jahreskreis C** |
| Erste Lesung: Jer 17,5-8; Zweite Lesung: 1 Kor 15,12.16-20; Evangelium: Lk 6,17-18a.20-26 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 142, 1+2  | Zu dir, o Gott |
|  | GL 143, 1+3! | Mein ganzes Herz |
|  | GL 381, 1+5! | Dein Lob, Herr |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 161 | Du rufst uns, Herr |
| Gloria: | GL 172 | Gott in der Höh |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 1, 1-4 u. 6 |  |
|  | Kehrvers: GL 31, 1 | Selig der Mensch |
|  | GL 543, 1+3 | Wohl denen, die da wandeln |
|  | GL 449, 1+2 | Herr, wir hören auf dein Wort |
|  |  |  |
| Halleluja: | Ruf: GL 174, 5 |  |
|  | *So spricht der Herr:* |  |
|  | *Freut euch und jubelt!* |  |
|  | *Euer Lohn im Himmel wird groß sein.* |
|  |  |  |
| Credo: | Sprechen |  |
|  | GL 802 | Den Taufbund wir erneuern |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 458 / 459  | Selig seid ihr |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 200 | Sanctus |
| Agnus Dei: | GL 203 | O Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 174, 5 + 544, 2  | Halleluja! Selig, die arm sind |
|  | GL 651, 7+8 | Selig, die bei dir wohnen  |
|  |  | Selig, die arm sind |
|  | GL 796, 1+4+5 | Herr, wir bitten |
|  |  |  |
| Schlusslied: | GL 395, (2!)  | Den Herren will ich loben |
|  | GL 822 (3+4!) | Groß sein lässt meine Seele |